भूमिका

मनुष्य अपने आप को अकेला महसूस करता है परन्तु उसके साथ एक अन्यान्य शक्ति भी कार्य करती है, जो उसे सदैव नयी बात सोचने को मजबूर करती है। अदृश्य और असीम शक्तियों से ही हम अभिभूत होते हैं और उसके अनुसार ही कार्य करते हैं क्योंकि ऐसी शक्तियॉ हमारे कार्य को प्रभावित करती है। किसी भी कार्य को करने के पूर्व एक कार्य योजना तैयार करना भी आवश्यक होता है। जिसके अनुरूप कार्य करके हम अपने उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं। शोध के लिये भी यही कार्य योजना लागू होती है।

समकालीन रचनाकारों में मैत्रेयी पुष्पा ने भी स्त्री तथा स्त्री–जीवन को आधार बनाकर साहित्य रचना की और बहुत कम समय में विशेष ख्याति भी प्राप्त की। मात्र दो दशकों में उन्होंने 20 रचनाएँ हिन्दी साहित्य–जगत् को देने का उल्लेखनीय कार्य किया है। निश्चित रूप से यह उनकी संवेदनशीलता, अनुभवों का संग्रह तथा लिखने की ललक ही है, जिससे उन्होंने इतने कम समय विशेष ख्याति अर्जित की है। इनका साहित्य मूलरूप से स्त्री जीवन की समस्याओं और संघर्ष पर केन्द्रित है और इसमें स्त्री–चेतना के स्वर मुख्य रूप से उभर कर सामने आते हैं। लेकिन यह स्त्री–चेतना किसी नारेबाजी या आन्दोलन का परिणाम नहीं है अपितु यह चेतना गाँव की सीधी–साधी अनपढ़, कम–पढ़ी लिखी तथा शिक्षित शहरी महिला में जीवन' के अनावश्यक बंधनों की कसावट के परिणामस्वरूप उत्पन्न मुक्ति की छटपटाहट से अंकुरित होती है। मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में अत्यंत सहज–सरल भाषा में जीवन के स्वाभाविक क्रियाकलापों के साथ जीवन जीती हुई स्त्री के लिए मुक्ति की आकांक्षा सर्वत्र परिलक्षित होती है। उनका कथा साहित्य स्त्री विषयक संवेदना के विविध आयामों से भरपूर है। उन्होंने कथा साहित्य के स्त्री पात्रों को ग्रामीण परिवेश में ढूँढा और उनके सुख–दुःख, संघर्ष, संवेदनाओं को पाठक तक ले गई। इनकी कथा भूमि ही नहीं, उनकी अनुभव और प्रेरणा भूमि भी गाँव ही है। यही ये विशेषताएँ हैं जिन्होंने मुझे मैत्रेयी पुष्पा के कथा–साहित्य पर शोध करने के लिए प्रेरित किया।

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध **"मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में ग्रामीण चेतना : एक अनुशीलन"** की पूर्णता हेतु शोध प्रबंध को सात अध्यायों में विभक्त कर मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में ग्रामीण चेतना के सन्दर्भ का अध्ययन किया है।

शोध–प्रबंध का प्रथम अध्याय **मैत्रेयीपुष्पा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व** के अन्तर्गत कथा साहित्य में मैत्रेयी पुष्पा के योगदान को बताया गया है। व्यक्ति परिचय के अंतर्गत उनके जन्म से लेकर अब तक के जीवन को रेखांकित किया है, जिसमें उनके जन्म, नाम, जन्मस्थान, माता–पिता, पारिवारिक पृष्ठभूमि, बचपन, शिक्षा–दीक्षा, विवाह, परिवार, बच्चों, साहित्यिक परिवेश, पुरस्कार व सम्मान आदि का विवेचन है। व्यक्तित्व के अन्तर्गत उनके आन्तरिक एवं बाह्य पक्षों को अंकित करते हुए, उनके जीवन संघर्ष, साहित्यिक यात्रा, एवं उनके द्वारा प्राप्त समस्त पुरस्कारों को प्रस्तुत किया गया है।

शोध–प्रबन्ध के द्वितीय अध्याय **हिन्दी कथा साहित्य में ग्रामीण चेतना के अन्तर्गत** चेतना समझने की वस्तु है उसे परिभाषित करना सरल नहीं है। व्यक्ति चेतना कारण ही क्रियाशील रहता है। चेतना रूप अत्यन्त सूक्ष्म और जटिल है। इसकी व्याख्या नियंत्रित शब्दों में नहीं की जा सकती है। फिर भी विचारकों ने अपने–अपने दृष्टिकोण से चेतना की व्याख्या करने का प्रयास किया है। 'चेतना' शब्द 'चित' से सम्बन्धित है। संस्कृत आचार्यों ने चेतना को बुद्धि–ज्ञान, जीवन–शक्ति, भावना या विचार के अर्थ में ग्रहण किया है। घीः, मति, चित, सवित्त, प्रतिपत, ज्ञाप्ति, सत्व एवं जीवंत के अर्थ में भी चेतना शब्द का प्रयोग किया जाता है। 'चैतन्य लक्षणा जीवः' अथार्त जीवन का लक्षण ही चेतना है।

चेतना और मनुष्य का मौलिक संबंध है। चेतना वह विशेष गुण है जो मनुष्य को सजीव बनाती है आरै चरित्र उसका वह संपूर्ण संगठन है। किसी मनुष्य की चेतना और चरित्र केवल उसी की व्यक्तिगत संपति नहीं होते। ये बहुत दिनों के सामाजिक प्रक्रम के परिणाम होते हैं। प्रत्येक मनुष्य स्वयं के वंषानुक्रम प्रस्तुत करता है। वह विशेष प्रकार के संस्कार पैतृक सम्पत्ति के रूप में पाता है। वह इतिहास को भी स्वयं में निरूपित करता है क्योंकि उसने विभिन्न प्रकार की शिक्षा तथा प्रशिक्षण को जीवन में पाया है।

चेतना का हमारी जीवन–शैली में बहुत महत्व है। मनोविज्ञान की दृष्टि में चेतना मानव में उपस्थित वह तत्त्व है जिसके कारण उसैसभी प्रकार की अनुभूतियाँ होती हैं। चेतना के कारण ही हम देखते, सुनते, समझते और अनेक विषयों पर चिंतन करते हैं। इसी के कारण हमें सुख–दुःख की अनुभूति होती है। मानव चेतना की तीन विशेषताएँ हैं। वह ज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक हाती है। चेतना ही सभी पदार्थों की जड़–चतेन, शरीर–मन, निर्जीव–सजीव, मस्तिष्क–स्नायु आदि को बनाती है। उनका रूप निरूपित करती है। चेतना के विषय में हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि मनुष्य के मस्तिष्क में हाने वाली क्रियाओं अर्थात् कुछ नाड़ियों के स्पंदन का परिणाम ही चेतना है। यह अपने में स्वतन्त्र कोइ अन्य तत्व नहीं है। शरीर चेतना के कार्य करने का यंत्र मात्र है, जिसे वह कभी उपयोग में लाती है और कभी नहीं लाती है। परन्तु यदि यंत्र बिगड़ जाए या टूट जाए तो चेतना अपने कामों के लिए अपंग हो जाती है। चेतना के बिना सुना व देखा नहीं जा सकता है।

शोध–प्रबन्ध के तृतीय अध्याय **मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों एवं कहानियों में अभिवक्त भारतीय ग्रामीण समाज के अन्तर्गत** मैत्रेयी पुष्पा ने मध्य वर्गीय परिवार में जूझती नारी के संघर्ष और द्वंद्व को नवीन रूप में प्रस्तुत ही नहीं किया अपितु उसमें नयी दिशा भी दी है। ये स्त्रियाँ अपने अधिकारों के प्रति संघर्ष और द्वंद्व के प्रति पूर्ण रूप से सजग हैं। इस सृष्टि का शाश्वत सत्य है। प्रकृति में विभिन्न स्तरों पर यह संघर्ष निरंतर चलता रहता है।

कथा साहित्य में मैत्रेयी पुष्पा का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने अपने उपन्यासों एवं कहानियों में वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, दार्शनिक और नैतिक समस्याओं को नवीन दृष्टि से देखा और चित्रित किया है। मैत्रेयी पुष्पा ने उच्च, मध्यम और निम्न वर्गीय परिवार में जूझती नारी के संघर्ष और द्वंद्व को नवीन रूप में प्रस्तुत ही नहीं किया अपितु उसमें नयी दिशा भी दी है। मैत्रेयी पुष्पा ने उपन्यासों एवं कहानियों में विद्रोह के साथ सामन्तीय संस्कारों, आर्थिक, पारिवारिक संबंधों में नवीन वैचारिक दृष्टि को अपनाया है। प्रस्तुत अध्याय में मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों एवं कहानियों में लोक संस्कृति, संस्कार आदि का अंकन भी किया गया है।

शोध–प्रबन्ध के चतुर्थ अध्याय **मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहिम्य में ग्रामीण जीवन का आर्थिक, धार्मिक राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्थिति के अन्तर्गत** मैत्रेयी पुष्पा के अनुसार आज का युग गद्य का युग है। यह वैज्ञानिक प्रभाव के कारण है वर्तमान युग में लेखक और पाठक दोनों के लिए कथा साहित्य अधिकाधिक लोकप्रिय होता जा रहा है। ''आज के जीवन के भावसत्य को अपनी समग्रता में सभी स्तरों और आयामों, व्यापकता और गहनता के दोनों क्षेत्रों में अभिव्यक्त करने के लिए उपन्यास एवं कहानियों से अधिक समर्थ माध्यम दूसरा नहीं। वस्तु का यथातथ्य चित्रण इसी विद्या में संभव होता है। ''सत्य का वास्तविक अंदेशा उपन्यास के अतिरिक्त किसी माध्यम द्वारा संभव नहीं। इस प्रकार वर्तमान समाज के वास्तविक जीवन की चित्रशाला उपन्यास एवं कहानियां ही है। प्रस्तुत अध्याय में समकालीन हिन्दी उपन्यास की साहित्य की सुप्रसिद्ध लेखिका मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी ग्रामीण भावाभिव्यक्ति तथा विभिन्न ग्रामीण समस्याओं के चित्रण के लिए उपन्यास एवं कहानियों जैसे सशक्त विद्या का चयन किया है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास एवं कहानियों में जिन ग्रामीण समस्याओं को अंकित किया है, वे निम्न हैं –आर्थिक समस्या, धार्मिक समस्या, राजनीतिक समस्या तथा सांस्कृतिक समस्या। उक्त अध्याय में लेखिका ने जीवन से सम्बन्धित इन सारी समस्याओं का उल्लेख अपने उपन्यासा एवं कहानयों में किया है। मैत्रेयी जी ने स्त्री–पुरुष को आधार बना कर इन समस्याओं की चर्चा अपने उपन्यासों में की है।

शोध–प्रबन्ध के पंचम अध्याय **मैत्रेयीपुष्पा के उपन्यासों एवं कहानियों में ग्राम्य समाज की समस्याएँ के अन्तर्गत** मैत्रेयी पुष्पा के अनुसार भारत विकास के रास्ते पर है। यहाँ के महानगर विदेशी नगरों के साथ होड़ करने में सक्षम हैं फिर भी भारत की आत्मा गाँवों में बसती है क्योंकि यथार्थ भारत की जिंदगी वहाँ पनपी है। इसलिए आज के कथा साहित्यकारों ने भी अपने लेखन की पृष्ठभूमि के लिए गाँव को चुना है। हिन्दी साहित्य में महिला कथाकारों ने समाज में फैली बुराइयों की ओर समाज का ध्यान आकर्षित किया है। प्रस्तुत अध्याय में ग्रामीण समाज की स्त्री का आर्थिक विषमता के कारण अधिकाधिक शोषण होता गया है। अशिक्षित, विधवा तथा वृद्ध स्त्री अपने परिवार पर आर्थिक विपन्नता के कारण अधिक आश्रित रही है।

इसलिए उसका शोषण भी अधिकाधिक होता गया है। उक्त अध्याय में मैत्रेयी जी के उपन्यास एवं कहानियों में ग्रामीण समाज की समस्या का चित्रण किया गया है।

शोध–प्रबन्ध का षष्ठ अध्याय **मैत्रेयीपुष्पा के कथा साहित्य का शिल्प विधान (उपन्यास एवं कहानियों के संदर्भ में)** में शिल्पगत संवेदना के विविध आयामों का स्वतंत्र विवेचन–विश्लेषण किया है। कथा साहित्य का शिल्प विधान, कल्पना और यथार्थ के ताने–बाने से बुना हुआ होता है, जिसमें कथ्य, पात्र, परिवेश, कथोपकथन एवं सोद्देश्यता के तत्वों के साथ–साथ सांकेतिकता, संप्रेषणीयता की भावना भी सक्रिय होती रहती है। प्रत्येक रचनाकार अपनी इच्छित विषयवस्तु के संप्रेषण हेतु विभिन्न शैली–रूपों का इस्तेमाल कर लेता है। मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में आत्मकथात्मक शैली, इतिवृत्तात्मक शैली, विवेचन शैली व्यंग्यात्मक शैली एवं सांकेतिक शैली, वार्तालाप एवं संवाद शैली, वर्णनात्मक शैली, विश्लेषणात्मक शैली, पत्रात्मक शैली, प्रतीकात्मक शैली आदि के दर्शन होते हैं। जिसका यथासंभव विश्लेषण किया गया है। अपनी रचना में रचनाकार या तो नितांत नई भाषा गढ़ता है, जो भाव–संप्रेषण के लिए उपयुक्त हो। मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य के केन्द्र में बुन्देलखण्ड, ब्रज प्रदेश होने के कारण उन्होंने वहाँ की भाषा का प्रयोग किया है। जनवाणी पर सहज असामान्य अधिकार होने के कारण वह कथानक और परिवेश को सजीव बनाती है। जहाँ–जहाँ शहरी वातावरण से युक्त कहानी या उपन्यास है वहाँ लेखिका ने उस परिवेश की भाषा का समर्थ प्रयोग किया है।

शोध–प्रबन्ध के सप्तम अध्याय **उपसंहार** के माध्यम से शोध–प्रबन्ध का सार प्रस्तुत किया गया है।

शोध के अन्त में संदर्भ ग्रन्थ सूची को सम्मिलित किया गया है।

सम्पूर्ण शोध–प्रबन्ध के निष्कर्षो को लेकर वाद–विवाद संवाद की स्थितियाँ सदैव बनती रहती है क्योंकि प्रत्येक मनुष्य के सोचने समझने और विवेचन की दृष्टि अलग होती है। अतः भविष्य में वाद–विवाद और संवादों की श्रृंखला में इन निष्कर्षो और अवधारणाओं को सम्मिलित किया जाय और महत्व दिया जाय तो मैं अपने इस लघु प्रयास को सार्थक मान सकूंगा।